ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 191-194

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

महिला स्वास्थ्य एवं सतत विकास लक्ष्यः बेहतर स्वास्थ्य का उद्देश्य प्राप्त करने मे सतत् विकास लक्ष्य की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

1. प्रिया श्रीवास्तव
2. प्रो0 सुभी धूसिया

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-03.12.2023, Revised-07.12.2023, Accepted-11.12.2023 E-mail: sweetparimahi@gmail.com

सारांशः ***महिला स्वास्थ्य वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योकिं लगभग आधी आबादी का स्वास्थ्य सत्त विकास लक्ष्य को पूरा करने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व है। दुनिया के अधिकांश हिस्सो में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की सामाजिक स्थिति थोड़ी निम्न है। समय परिवर्तित होता गया महिलाऐं लिंग भेद का शिकार होती रही, जिसके वजह से महिलाओं के शिक्षा, उनके सशक्तिकरण एवं उनके स्वास्थ्य सुविधाओं मे अत्यधिक सुधार नही हो सका। यह वजह है कि सतत विकास एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं दुनिया के सभी देश लिंग समानता, शिक्षा तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने के निरन्तर उपाय कर रहे है। जिससे की वे राष्ट्र के विकास मे अपना योगदान दे सके।***

यह शोध पत्र सत्त विकास लक्ष्य तीन जो पूरी तरह से स्वास्थ्य पर केन्द्रित है एवं समस्त आयु वर्ग के लिए स्वस्थ जीवन और आरोग्यता को बढ़ावा देना सुनिश्चित करते है। जिसमें विशेषक राष्ट्र के निर्माण मे अपना अदभूत सहयोग देने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए क्या प्रयत्न किये जा रहे जिससे वे निरोग होकर अपने परिवार एवं आर्थिक विकास मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके पर आधारित है।

चूँकि नारी की संकल्प शक्ति, इच्छाशक्ति, त्वरित फैसले लेने मे उनका सामर्थ, उनकी परिश्रम की पराकाष्ठा, ये मातृशक्ति की पहचान है, इसलिए सरकार तथा परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि देश के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं के उत्तम स्वास्थ्य की व्यवस्था करने में अपना योगदान प्रदान करे जिससे महिलाएं विकास में मात्र अपनी सहभागिता ही नही दे वरन् प्रत्येक क्षेत्र में आगे आकर अपना नेतृत्व भी प्रदान करे।

कुंजीभूत शब्द– स्वास्थ्य, सतत विकास, लिंग समानता, शिक्षा, जीवन प्रत्याशा, आत्मोत्साह, संकल्प , भावात्मक, संर्वगात्मक,यात्मिक

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा दी परिभाषा के अनुसार ''स्वास्थ्य रोग का ना होना या अशक्तता मांग नही है बल्कि पूर्ण शारीरिक, मानसिंक और सामाजिक तन्दुरस्ती की स्थिति है'' उत्तम स्वास्थ्य मानव जीवन की एक बहुमूल्य निधि है। मानव जीवन और उसकी प्रसन्नता के लिए स्वास्थ्य से ज्यादा अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण किसी अन्य वस्तु की कल्पना करना कठिन है।

चरक संहिता के अनुसार, स्वास्थ्य की परिभाषा :–

'' धर्मार्थकाम मोक्षणामारीग्यं मूलमुक्तक्तमम्'' (च0सू0 1/15)

अर्थात धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चतुर्विध पुरूषार्थ का प्रधान मूल आरोग्य ही है। रोग मानव के जीवन को नष्ट करने वाला है अतः हमे हर सम्भव प्रयत्न करते हुए अपने आरोग्य की रक्षा करनी चाहिए। व्यक्ति को आरोग्यपूर्ण या स्वस्थ बने रहने के लिए अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक पक्ष को ध्यान में रखने की अत्यन्त आवश्यकता है। उत्तम स्वास्थ्य तन, मन और आत्मोत्साह के समन्वय का नाम है। स्वास्थ्य वह शारीरिक, भावात्मक, संर्वगात्मक तथा आध्यात्मिक योग्यता है जो हमारे बदलते परिस्थिति के अनुसार हमें सामंजस्य के योग्य बनाती है। स्वास्थ्य की रक्षा करने के उपाय बताते हुए आर्युर्वेद कहता है :–

'' त्रय उपस्तम्भाः आहारः स्वाज्नों ब्रम्हचर्यामिति''

अर्थात शरीर और स्वास्थ्य को स्थित, सु.ढ़ और उत्तम बनाये रखने के लिए आहार, स्वप्न (निद्रा) और ब्रम्हचर्य ये तीन उपस्तम्भ है। इन तीनों उप स्तम्भों का यथा विधि सेवन करने से ही शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विश्व स्वास्थ्य 7 अप्रैल 1948 से विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पूरी दुनिया में एक साथ वैश्विक स्वास्थ्य जागरूकता दिवस के रूप में मानने के लिए संकल्पित हुआ।

महिलाओं के लिए स्वास्थ्य की परिभाषा– भारत आजादी के अमृत महोत्सव के साथ अपनी स्वतंत्रता की 75वी वर्षगाठ मना रहा है इस क्रम मे सशक्त नारी, सशक्त भारत (Empowered women, empowered nation) नारे के साथ ही सतत् विकास के लक्ष्यो को पूरा करने में अग्रसर है। नारी इस सृष्टि की अदभूत रचना है। जिसमे मानव निर्माण मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः उनके उत्तम स्वास्थ्य व्यस्था होनी चाहिए।

महिलाओं का स्वास्थ्य मानव सभ्यता और स्वास्थ्य प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है, क्योंकिं महिलाएं मानव समाज का लगभग आधा भाग है। समाज परिवार एवं राष्ट्र के विकास में महिलाओं के स्वास्थ्य का स्तर अच्छा होना एक महत्वपूर्ण पहलू है। महिलाओं एवं पुरूषों की स्वास्थ्य जरूरत भिन्न–भिन्न है लेकिन स्वास्थ्य रहने का अधिकार पुरूषों के समान ही है। चूँकि महिलओं और लड़कियों के लिए लैंगिक भेदभाव व्यवस्थित रूप से स्वास्थ्य देखभाल तक उनकी पहुच कम कर देता है। ऐसे कारणों से जिनमें कम वित्तीय संसाधन और गतिशीलता पर बाधाए शामिल है।

2011 में Health care women international जर्नल मे प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि दुनिया के श्रम विभाग मे महिलाओं की दो तिहाई हिस्सेदारी है, लेकिन इसके विपरित उनकी आमदनी कुल आय की केवल 10फीसदी है। इस ऑकडें में घरेलू कामकाज में लगी महिलाओं को शामिल नही किया गया है। दुनिया की आबादी का इतना बड़ा हिस्सा होने और राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद भी महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाए नही मिल पा रही, जिनकी की वास्तविक हकदार

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

है। व्यक्ति की सामाजिक सक्षमता और विकास के संदर्भ में उसका स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण सूचक माना गया है, इस तथ्य को अगर जॉच की जाये, तो महिलाओं की स्थिति और अक्षमता की आशावादी तस्वीर उमर कर सामने नही आती है। किसी भी महिला के लिए अकल्पनीय आनंद का क्षण होता है, जब उसकी गोद में उसके नवजात को दिया जाता है यह एक ऐसा आनंद है, जिसे अनुभव करने का हर एक मॉ को अधिकार होना चाहिए। परन्तु स्वास्थ्य शिशु को जन्म देने के लिए माता का स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। '' एक स्वस्थ मॉ ही स्वस्थ शिशु को जन्म देने में सक्षम हो सकती है, यदि माता अस्वस्थ, निर्बल, बीमार, कमजोर अथवा किसी गम्भीर बीमारी से ग्रस्त होगी तो वह स्वस्थ शिशु को जन्म नही दे सकेगी। वर्तमान समय में महिलाओं के सामने सबसे वड़ी समस्य उनके स्वास्थ्य के लेकर है चाहे प्रसूति सम्बन्धी, कालाबाजार एड़स सम्बन्धी बिमारियों से सबसे अधिक पीड़ित है। महिलाओं के स्वास्थ्य पर विशेष रूप से प्रभाव डालने वाले सांस्कृतिक मानदण्ड है विवाह के प्रति .ष्टिकोण, विवाह की आयु जन क्षमता की दर और बच्चे का लिंग, परिवारिक संगठन के अनुसार महिला की आपेक्षित भूमिका है। प्रायः देखा गया है कि सर्वप्रथम पूरे परिवार को भोजन कराती है। और अंत मे एवंम भोजन करती है यही कारण है कि गरीब परिवारो मे भोजन की अपर्याप्तता के चलते महिलाएं कुपोषण से अधिक प्रभावित होती है, सेवा भाव की इसी प्रक्रिया का आरोप लड़कियों में छोटी उम्र से ही प्रारम्भ कर दिया जाता है।

महिला स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई भी चर्चा मात्र उसकी मातृत्व क्षमता, सन्तान जन्म तथा संतुति नियंत्रण जैसे मुद्दो तक ही केन्द्रित न रहे वरन् आवश्यकता इस बात है कि महिला स्वास्थ्य को एकांगी दृष्टिकोण से न देखते हुए एक पूर्ण समन्वित स्वास्थ्य नीति का निर्माण हो। आज सरकार महिलाओं के उत्थान विकास और उन्हे सशक्त बनाने के वाले सारे प्रयासो पर जोर दे रही है। वैश्वीकरण के इस दौर मे महिलाए आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ है। जितनी तीव्र गति से महिलाओ का विकास होगा उतनी ही तीव्र गति से देश प्रगति खुशहाली और समृद्धि के पथ पर अग्रसर होगा, जिसमे सतत् विकास लक्ष्य अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

सतत् विकास की अवधारणा–सन् 1987 में पहली बार ब्रटलैण्ड रिर्पोट के प्रकाशन के साथ प्रकट हुई। इस रिर्पोट मे कहा गया कि – '' विकास हमारी आज की जरूरतों को पूरा करे, साथ ही आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं को भी अनदेखा न करे।

सतत् विकास एक दूरदर्शी योजना है जो आर्थिक विकास सामाजिक, न्याय संगतता और पर्यावरण के समावेश से विकास का आहवान करती है तथा जो विकास के लिए भविष्य की पीढ़ियो की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने पर जोर देता है। और विकास की इस प्रकिया मे हमारा परितंग भी स्वास्थ्य एवं सतत अवस्था मे बना हरे गरीबी उन्मूलन, सामाजिक एवं अर्थिक समावेशन और पर्यावरण की रक्षा को अधिक कारगर बनाने हेतु मुख्य लक्ष्यों के साथ सन 2016 मे सतत विकास लक्ष्यो ने शताब्दी विकास लक्ष्यो का जगह ली। इसके मूल में 17 लक्ष्यों एवं 169 उपलब्ध या लक्षित लक्ष्य (Target) है जो वैश्विक साझेदारी में सभी देशों (विकसित एवं विकासशील) द्वारा कार्यवाही के लिए एक Urgent Call की तरह आहवान है। इन 17 लक्ष्यों को वर्ष 2030 तक की अवधि के भीतर प्राप्त किया जाना है। सतत् विकास व्यापक के कुछ व्यापक तथा दूरगामी उद्देश्य है जो जाति, धर्म, भाषा तथा क्षेत्रिय बन्धनों से मुक्त है। ये उद्देश्य शोषकारी मानसिकता की जंजीरों से अर्थ व्यवस्था की मुक्ति हेतु ऐसा अधिकार है जो राष्ट्रों के जैव सम्पदा को नष्ट होने से बचाता है तथा उनको सुरक्षित रखने का पुरजोर प्रयत्न करता है सतत् विकास लक्ष्य के इसी क्रम में तीसरा लक्ष्य स्वस्थ्य जीवन सुनिश्चित करना और सभी उम्र के लोगो के लिए कत्याण को बढ़ावा देना निश्चित है। बाद में एसडीजी 3 में 13 लक्ष्य शामिल है, जिसमें चार कार्यान्वयन के साधन लक्ष्यो के रूप में सूचीबद्ध है। जिसमें अन्य चयनित लक्ष्यों में स्वास्थ्य संबधी लक्ष्यो पर प्रकाश डाला गया है जिसमे सभी प्रकार के कुपोषण की समाप्ति सुरक्षित पेयजल तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता तक सार्वभामिक और निष्पक्ष पहुॅच प्राप्त करना शामिल है। सतत विकास लक्ष्य 3 में महिलाओं एवं लडकियो की जरूरतो का विशेष ध्यान दिया गया है। वैश्विक स्तर पर इस योजना के तहत बच्चे के जन्म के समय मातृत्व मृत्यु दर को प्रति 1 लाख से घटाकर 70 करने का लक्ष्य रखा गया है। 2030 तक नवजातो और 5 साल के नीचे के बच्चो की मौत दर को घटाने का भी फैसला किया गया है। परिवार नियोजन, जागरूकता और शिक्षा के साथ यौन प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल सेवाओ की सार्वभौमिक पहुॅच की व्यवस्था किया जायेगा। राष्ट्रीय रणनीतियो और कार्यक्रमों में प्रजनन स्वास्थ्य को विशेष रूप से शामिल किया गया है।

आज भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। अशिक्षा, गरीबी और अज्ञानता कही न कही इन सबके पीछे खडी है सरकार ने महिलाओं के प्रसूति लाभ सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमो के माध्यम से माताओं को सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है। जननी सुरक्षा योजना राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं मे संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहन देने हेतु लागू की गयी योजना है इसके अन्तर्गत सभी महिलाओ को सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रो यथा उपकेन्द्रो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो यथा उपकेन्द्रे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि के जनरल वार्ड में प्रसव कराने पर प्रोत्साहन धनराशि अनुमन्य है (NFHS) राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण सत्त विकास लक्ष्यों के 2030 तक टॉरगेट को हासिल करने के लिए एक निर्देशक के रूप में काम करता है–

- 19 राज्यो और केंन्द्रशासित प्रदेशो मे पॉच में से चार से अधिक महिलाओं के संस्थागत प्रसव के साथ इसमे व्यापक बृद्धि देखने को मिली है।
- महिलाओं द्वारा परिचालित बैक खातो के सम्बन्ध मे (NFHS) और NFHS-5 के बीच उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है।
- राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्रजनन शिशु और बाल मृत्यु दर, परिवार नियोजन, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, प्रजनन स्वास्थ्य, पोषण, एनीमिया, स्वास्थ्य और परिवार नियोजन सेवाओ की गुणवत्ता की जानकारी प्रदान करता है।
- रिर्पोट मे कहा गया है कि पहले चरण वाले राज्यों में प्रजनन दर गिरावट आई है और गर्भ निरोधको के उपयोग में वृद्धि हुई है। सर्वेक्षण मे सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में 12 से 23 महीने के बच्चों के टीकाकरण कवरेज मे काफी सुधार पाया गया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के पाचमे चरण की रिर्पोट से पता चला है कि भारत की कुल प्रजनन दर (फर्टालेटी रेट) 2.2 से घटकर 2.0 हो गई है। इसे पता चलता है कि देश में जनसंख्या नियत्रंण के लिए उठाए गए कदम सकरात्मक परिणाम दे रहे है (NFHS-) के चौथे चरण के आकडे के अनुसार प्रजनन दर 2.7 था जो प्रति महिला बच्चों की औसत संख्या के रूप मे कुल प्रजनन दर निकाला जाता है नए आकड़ों के अनुसार, देश में केवल 5 ऐसे राज्य है जहा की प्रजनन क्षमता 2.1 से अधिक है इनमे बिहार (2.98) मेघालय (2.91), उत्तर प्रदेश (2.35), झारखण्ड (2.26) और मणिपुर 2.1 शामिल है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरूआत 12 अप्रैल 2005 को गई, जिसके माध्यम से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले नागरिको को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने हेतु इस मिशन को देश के प्रत्येक राज्यों में लागू किया गया। इस क्रार्यक्रम के अन्तर्गत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओ (आशा कार्यकत्री) के माध्यम से महिलाओं में उच्चीकृत स्वास्थ देखभाल तक पहुच को बढ़ावा दिया गया। राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ मिशन (NUHM) गुणवत्ता प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या तक अपनी पहुच को आसान करके गतिशील रूप से बदलती शहरी आबादी के स्वास्थ्य जोखिमो को पूरा करने के लिए संस्थागत तत्र और प्रबधन प्रणाली को लाना है। स्वच्छ भारत मिशन में महिलाओं के लिए स्वच्छा को प्रमुख महत्व दिया गया है। इस मिशन के तहत 1.96 लाख करोड़ की अनुमानित लागत पर ग्रामीण भारत में 90 मिलियन शौचालयों का निर्माण करके 20अक्टूबर 2019 तक "खुले में शौच मुक्त " (ओ0पीडी0) भारत को प्राप्त करना उसी के तत्वाधान में पिंक टायलेट स्कीन, सनेटरी नैपकिन स्तनपान क्षेत्र और साथ ही साथ महिलाओ और बच्चो को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जाना शामिल है। यूनिसेफ की एक रिर्पोट में कहा गया है कि तमिलनाडू मे लगभग 79 प्रतिशत लड़किया और महिलाए, उत्तर प्रदेश मे 66 प्रतिशत, राजस्थान मे 56 प्रतिशत और पश्चिम बंगाल मे 51 प्रतिशत महिलाए को मासिक धर्म के समय स्वच्छता की जानकारी नही है।
- स्वच्छ भारत अभियान के तहत, 70 करोड़ रूपये की अनुमानित लागत की फ्री पैड योजना, सबला योजना, राष्ट्रीय किशोर, राष्ट्री किशोर स्वास्थ्य और विभिन्न राज्य सरकारो के कई अन्य प्रयास किए गए है। जैसे फिचर फिल्म, पैडमैन शहरी क्षेत्रो मे जागरूकता फैलाने में मददगार साबित हुआ है।

सहित्य का अध्ययन–

1. विनोद कुमार सिन्हा (2009) के अनुसार– " आज भी देश में 73 प्रतिशत आबादी गॉवों में रहती है फिर भी यहॉ उपलब्ध स्वास्थ्य सेवायें शहरों के मुकाबलें 15 प्रतिशत भी नही है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के ऑकड़ें के अनुसार देश मे 2083 लोगों पर एक चिकित्सक और प्रति 6000 लोगों पर एक सहायक नही उपलब्ध होनी चाहिए, लेकिन 70 से 80 प्रतिशत चिकित्सक और 90 प्रतिशत नर्से शहरी क्षेत्रों में काम कर रहे है। इससे यह समझा जा सकता है कि ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था की हकीकत क्या है।

2. शैल्जा चन्द्रा के अध्ययन में पाया गया कि "मातृ –मृत्यु दर जो गर्भावस्था के दौरान किसी महिला की मृत्यु से सम्बन्धित है। इसका जनसख्या स्थरीकरण से सीधा सम्बन्ध है, क्योकि यह इस बात का घोतक है कि शैशवास्था मे किसी नवजात को कैसी देख–रेख हो पायेगी, अगर माता की मृत्यु हो जाती है, तो बच्चे की उपेक्षा होना निश्चित है। इसलिए इस बात पर खास तौर से ध्यान दिया जा रहा है कि प्रसव अस्पताल मे हो सरकार द्वारा चलाई जा रही जननी सुरक्षा योजना को अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है और अस्पताल मे प्रसव की सुविधा से लाभ प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या बढ़कर गई है।

3. अखिलेश्वर लाल श्रीवास्तव– लिखते है कि विभिन्न प्रकार के रोग वातावरण से व्यक्ति अथवा स्त्री को मिलते है जैसे टी0बी0, Viral Internal Infection etc, अतः नारी के उपचार एवं निदान में समाज मे मनोवैज्ञानिक कारको को विशेष महत्व प्रदार किया जाने लगा है। विश्व महिलाओं के चौथे सम्मेलन में कहा गया है कि स्त्री का स्वास्थ्य परिवार की आर्थिक सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता है। काम के बोझ से स्त्रियों का ध्यान एवं के स्वास्थ्य के प्रति जाता ही नही इतने कठिन परिश्रम के पश्चात इन्हें पौष्टिक आहार भी प्राप्त नही होता इसलिए ये अस्वस्थ रहती है।

4. UNICEF- The state of the world education, Published व्गवितक University Press (1987) विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनीसेफ द्वारा स्वास्थ्य का अभिप्राय केवल रोग तथा दुर्बलता की रोकथाम करने तक ही नही है यह मनुष्य की शारीरिक, मानसिंक, सामाजिक रूप से पूर्णतः सतुलित अवस्था है, जहॉ तक हो सके खासकर महिला एवं बच्चो के उत्तम स्वास्थ्य स्तर का विकास करना ही एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक लक्ष्य है।

5. ए0 आर0 देसाई, (Indian Rural Problem) Rawat Publication (1964) भारत मे ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रो में महिलाए गर्भावस्था के कुपोषण की शिकार हो जाती है। महिलाओं के आहार में सामन्यतः कौल्शियम, विटामिन ए, विटामिन सी, राइवोलेविन की कमी देखी गई है। ग्रामीण लोगो में अशिक्षा व गरीबी के कारण उनके आहार में कैलोरी तथा प्रोटीन एवं अनिवार्य जमीनों एसिड का अभाव रहता है।

अध्ययन का उद्देश्य– सतत् विकास एवं महिला स्वास्थ्य से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तको, अन्तराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्र, पर्त्रिकाओं का अध्ययन करने के पश्चात प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना है कि किस प्रकार सतत विकास लक्ष्य 3 में महिला स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रयास किये जा रहे है। जिससे स्वास्थ्य के प्रति उनकी जागरूकता तथा सरकारी कार्यक्रमो के क्रियान्वय मे उनकी सहभागिता बढ़ें।

शोध पद्यति– प्रस्तावित शोध पत्र मूल रूप से वर्णानात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। यह शोध पत्र सतत विकास लक्ष्य के अन्तर्गत महिला स्वास्थ्य में होने वाले परिर्वतन की समीक्षा करता है। इस शोध पत्र के द्वारा जननी सुरक्षा के राष्ट्रीय ग्रामीण एवं शहरी स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं के स्वास्थ्य का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है तथा साथ ही साथ इस बात

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

का अवलोकन किया गया है कि सतत विकास लक्ष्य 3 के अवधारणा के साथ लोगो की स्वास्थ्य प्राख्यात को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाने लगा। प्रस्तावति शोध पत्र मे प्रयुक्त आकड़ें इस अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार, विशुद्वा रूप से द्वितीयक स्त्रोतों से लिया गया है।

निष्कर्ष– भारतीय महिलाओ का स्वास्थ्य आंतरिक रूप से समाज मे उनकी स्थिति से जुडा हुआ है। भारतीय महिलाओं द्वारा परिवारो मे किये जाने वाले योगदान को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। प्रायः देखा गया है कि महिलाओ के पास शिक्षा और औपचारिक श्रम बल भागीदारी दोनो का निम्न स्तर है। उनके पास थोडी स्वायत्तता होता है, पहले वे पिता, फिर पति तथा अतः बेटे के नियंत्रण में रहती है जिसका उनकी स्वास्थ्य स्थिति पर नाकरात्मक प्रभाव दिखता है। यह शोध पत्र महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करने मे सतत विकास लक्ष्य के द्वारा किये जाने वाले प्रयासो की भूमिका को परिभाषित करता है तथा सरकार द्वारा चलाये जा रहे महिलाओ के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों की ओर ध्यान केन्द्रीत करता है। प्रस्तुत अध्ययन मे पाया गया है कि सतत विकास लक्ष्य थीम जो स्वास्थ्य पर केन्द्रीत है उसके अन्तर्गत महिलाओं की स्थिति को और बेहतर किया जा रहा है। जिससे कि वे सशक्तरूप से समाज के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://dhyegaias.com/hindi/current ffoairs/daily current ffaaire/national- family health sarvery nfhs
2. http://k~ ignited in /1/a/30345
3. http://www.undp.org/sustainabledevolopment goals /good health
4. पंत, कविता (मार्च 2013), महिलाओं और बच्चों के कल्याण की घोषणाए योजना पत्रिका भवन नई दिल्ली।
5. नीलू, अरूण (2009), स्वस्थ जीवन की और स्त्री स्वास्थ्य की हकीकत योजना –53 (10), पृ0सं0, 11–13.
6. चौरसिया, मुकेश (2008), ग्रामीण स्वास्थ्य–ग्रामीण विकास में स्वास्थ्य सेवाओ का महत्व कुरूक्षेत्र 54 (12) पृ0सं0 21–25.
7. रूडी, निको (2017), फन्डामेंटल ऑफ सस्अेनेबल डेवलपमेंट, न्यूयार्क, रूटलेज पब्लिकेशन।
8. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की अधिकारिक बेबसाइट www.mpwed.in
9. श्रीवास्तव, अखिलेश्वर लाल, (2008), चिकित्सा सामाजिक विज्ञान की रूपरेखा, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान–लखनऊ, नौटियाल शिवानन्द, पर्यावरण समस्या और समाधान सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. नोटियाल शिवानन्द, पर्यावरण समस्या और समाधान सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. चन्द्रा शैल्जा (2009), स्वस्थ जीवन की ओर जनसंख्या स्थरीकरणः एक साधे सब सधे योजना 53(10), पृ0सं0 6–8.

*****